Lec-20

Smt. Shanta Singh
Dept. of LSW
SNSRKS college, Saharsa.

हड़ताल के प्रभाव
(Effects of Strikes)

जब भी कोई औद्योगिक विवाद होता है और उसके फलस्वरूप हड़ताल होती है तो उसके कुछ परिणाम होते हैं। प्रत्येक हड़ताल की दो स्थिति होती है। प्रथम या तो हड़ताल सफल होगी या द्वितीय हड़ताल विफल होगी। दोनों ही स्थिति में हड़ताल के कुछ परिणाम होते हैं। यदि हड़ताल सफल होती है तो श्रमिकों की माँग की पूर्ति होती है और यदि हड़ताल विफल होती है तो श्रमिकों को न केवल आर्थिक क्षति होती है अपितु उन्हें यातनाएँ भी सहनी पड़ती है। वस्तुतः हड़ताल एक दोधारी तलवार है। एक ओर तो श्रमिकों द्वारा हड़ताल रूपी हथियार का प्रयोग नियोक्ताओं को आर्थिक नुकसान पहुँचाने के लिए किया जाता है तो दूसरी ओर स्वयं श्रमिक भी नुकसान में पड़ जाते हैं। इसके साथ ही दूसरी तरफ उपभोक्तागण एवं साधारण जनता को भी काफी हानी उठानी पड़ती है, जिसके फलस्वरूप देश की आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक व्यवस्था असंतुलित हो जाती है। हड़ताल के फलस्वरूप उत्पादन में कमी होती है जिसके परिणामस्वरूप राष्ट्र की आर्थिक व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो जाती है, राष्ट्रीय लाभांश में कमी आती है। पूँजिवादी देशों में हड़ताल के प्रति सरकार की नीति में विभिन्नता पायी जाती है। कुछ देशों में हड़ताल पर किसी प्रकार के प्रतिबन्ध नहीं लगे होते। कुछ देशों में केवल सार्वजनिक महत्व के आयोगों और सेनाओं में ही हड़ताल पर प्रतिबन्ध लगे होते हैं। कई देशों जैसे भारत में हड़ताल पर व्यापक प्रतिबंध लगे होते हैं। हड़ताल पर

Scanned with CamScanner

जो विधिक प्रतिबन्ध इस बात के द्योतक हैं कि हड़तालें सार्वजनिक हितों के विकास में अवरोधक हैं। हड़तालों का, हड़ताल पर जाने वाले श्रमिकों एवं नियोजकों पर भी व्यापक प्रभाव पड़ता है। सामान्यतः, हड़ताल के दुष्परिणामों का ही उल्लेख किया जाता है, लेकिन गहराई पर जाने से इसके कुछ लाभ भी दृष्टिगोचर होते हैं। हड़ताल के मुख्य प्रभावों की संक्षिप्त विवेचना नीचे की जाती है—

श्रमिकों पर प्रभाव (Effects on workers)-

हड़ताल का प्रत्यक्ष प्रभाव श्रमिक के आर्थिक जीवन पर पड़ता है। श्रमिकों की आर्थिक स्थिति अत्यन्त ही दयनीय हो जाती है। श्रमिकों के आय के सभी स्रोत बन्द हो जाते हैं। इतना ही नहीं अपितु हड़ताल को बनाये रखने के लिये श्रमिक संघों पर अतिरिक्त व्यय का बोझ बढ़ जाता है। इस व्यय की अपूर्ति श्रमिकों को चन्दा देकर करना पड़ता है। विभिन्न प्रकार के सहायता कार्य, प्रचार कार्य, कानूनी सहायता इत्यादि खर्चों के लिए रुपये की आवश्यकता होती है। अत्यधिक खर्ची के कारण श्रमिक संघ का कोष बिलकुल खाली हो जाता है, हड़ताल समाप्ति के बाद भी श्रमिक संघों को जीवित रखने के लिए श्रमिकों को अतिरिक्त चन्दा देकर संघ के कोष को मजबूत करना पड़ता है जो उनके ऊपर एक अतिरिक्त आर्थिक बोझ होता है। हड़ताल की अवस्था में श्रमिकों को मजदूरी नहीं मिलती है। यदि हड़ताल दोनों पक्षों के समझौते द्वारा समाप्त होती है तो हड़ताल अवधि की अनुपस्थितियों को यदि अवकाश में समायोजित किया जाता है अन्यथा उसके बाद मजदूरी का भुगतान किया जाता है तो श्रमिकों को अवकाश का नुकसान होता है। हड़ताल का प्रभाव श्रमिक के आर्थिक जीवन पर ही केवल नहीं पड़ता है।

Scanned with CamScanner

श्रमिक एवं उसके परिवार का सदस्यों को मजदूरी की हानि से पौष्टिक एवं स्वास्थ्यकर भोजन नहीं मिल पाता है। इसके अतिरिक्त अनेक प्रकार की बीमारी का शिकार भी बनना पड़ता है। फलस्वरूप अतिरिक्त व्यय का बोझ श्रमिक पर पड़ता है।

हड़ताल श्रमिकों को किस प्रकार प्रभावित करती है, उसे हम निम्न रूप से बता सकते हैं —

(1) प्रतिकूल प्रभाव
(2) अनुकूल प्रभाव

1. प्रतिकूल प्रभाव (Adverse Effects)

(i) हड़ताल की अवधि में श्रमिकों को मजदूरी या अन्य नकद भत्ते नहीं मिलते। जब हड़ताल एक लम्बी अवधि तक चलती है तो श्रमिक एवं उनके परिवार के सदस्यों को आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

(ii) श्रमिकों को हड़ताल कोष के लिए विशेष चन्दा भी देना पड़ता है। साथ ही उन्हें हड़ताल के समय आयोजित प्रदर्शन, धरना आदि में सम्मिलित होने के लिए अपने पास से खर्च भी करना पड़ता है। इस तरह, एक ओर तो उन्हें हड़ताल की अवधि में मजदूरी नहीं मिलती, दूसरी ओर उन्हें अतिरिक्त व्यय को भी वहन करना पड़ता है।

(iii) कई देशों में हड़ताल पर कानूनी प्रतिबन्ध लगे होते हैं। अवैध हड़ताल में भाग लेने पर श्रमिकों को जुर्माने या कारावास से दण्डित भी किया जाता है। इसी तरह, हड़ताल के समय किये जाने वाले प्रदर्शन, धरना आदि में भाग लेने पर श्रमिकों को कारावास तथा जुर्माने का दण्ड भी दिया जा सकता है।

(iv) अवैध हड़ताल पर जाने के लिए श्रमिकों पर अनुशासन

समन्धी कार्यवाहियां भी की जा सकती हैं। ऐसे कई उदाहरण मिलते हैं जब हड़ताल पर जाने के कारण श्रमिकों को मुअत्तिल भी किया जाता है। इसी तरह अवैध हड़ताल में भाग लेने से श्रमिकों की प्रोन्नति भी रुक सकती है। कुछ देशों में तो नियोजकों को हड़ताल पर जाने वाले श्रमिकों की नौकरी समाप्त करने तथा उनकी जगह नए श्रमिकों को भर्ती करने की स्वतन्त्रता होती है।

(v) ऐसा भी होता है कि किसी उद्योग या प्रतिष्ठान में जब एक श्रमिक संघ हड़ताल का आह्वान करता है तो दूसरे श्रमिक संघ उसका विरोध करते हैं और अपने सदस्यों को काम करते रहने का आदेश देते हैं। इस तरह हड़ताल के कारण श्रमिकों के बीच कटुता एवं द्वेष-भाव में वृद्धि हो सकती है।

(vi) हड़ताल के समय श्रमिकों के मानसिक तनाव बढ़ जाते हैं। साथ ही उनका पारिवारिक जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है।

(vii) हड़ताल के कारण श्रमिक मजदूरी के अतिरिक्त अन्य आर्थिक लाभों, तथा सुविधाओं से वंचित किए जा सकते हैं।

(viii) सार्वजनिक महत्व के उद्योगों या सेवाओं जैसे रेलवे, विद्युत संस्थान, डाकतार आदि में हड़ताल होने से श्रमिकों को रोष-पूर्ण जनमत का सामना करना पड़ सकता है।

(2) अनुकूल प्रभाव (Favourable Effects)-

(i) जब हड़ताल के फलस्वरूप श्रमिकों की मांगें संतोषजनक ढंग से पूरी होती हैं, तो हड़ताल से उत्पन्न कठिनाइयों के बावजूद, श्रमिक लाभान्वित होते हैं। वास्तव में, श्रमिक हड़ताल के दुष्परिणामों से भली-भांति अवगत रहते हैं, लेकिन उन्हें आशा बनी रहती है कि हड़ताल के माध्यम से वे अपनी

अनुकूल प्रभाव (Favourable Effects)-

(i) जब हड़ताल विफल होती है, तब नियोजक का पलड़ा भारी हो जाता है और वह श्रमिकों पर हावी होने में सफल हो जाता है। हड़ताल की विफलता से श्रमिक संघ कमजोर हो जाते हैं और नियोजक इसका पूरा लाभ उठाते हैं।

(ii) हड़ताल के विफल होने से नियोजक श्रमिकों की माँगें पूरी करने से बच जाते हैं। इस कारण उन्हें संभावित आर्थिक भार से मुक्ति मिल जाती है।

(iii) हड़ताल की अवधि में नियोजक श्रमिकों को मजदूरी तथा अन्य भत्ते देने से बच जाते हैं।

(iv) कभी-कभी नियोजकों के पास उत्पादित वस्तुएँ बड़ी मात्रा में संचित हो जाती हैं। हड़ताल के कारण उत्पादन करने की कोई आवश्यकता नहीं पड़ती और संचित माल भी बिक जाता है।

(v) हड़ताल के कारण माल की कमी हो जाती है और नियोजक उसे अधिक कीमत पर बेच सकते हैं।

(vi) हड़ताल के कारण यंत्रों एवं मशीनों से काम नहीं लिया जाता, जिससे उनका अवक्षयण (depreciation) नहीं होता।

समुदाय एवं राज्य पर प्रभाव (Effects on Community and State)

हड़ताल से केवल श्रमिक या नियोजक ही प्रभावित नहीं होते, बल्कि उसका समुदाय तथा राज्य पर भी प्रत्यक्ष या परोक्ष प्रभाव पड़ता है। हड़ताल के प्रभाव राष्ट्रीय आय की वृद्धि, जन-समुदाय के जीवन स्तर, रोजगार, उपभोग, आर्थिक विकास, तथा जनसंख्या की उपलब्ध सुख-सुविधाओं पर पड़ते देखे हैं।

Scanned with CamScanner

माँगें पूरी करा सकेंगे। अनुभव बताता है कि ~~कोई~~ कई उद्योगों, सेवाओं एवं प्रतिष्ठानों में हड़ताल पर जाने के बाद ही श्रमिक अधिक मजदूरी तथा कार्य एवं नियोजन की अच्छी शर्तें और दशाएँ प्राप्त करने में सफल हुए हैं। भारत में कई संगठित क्षेत्रों ~~के~~ श्रमिक और कर्मचारी हड़ताल का सहारा लेकर ही अपनी दशाओं में सुधार लाने में सफल हुए हैं। दूसरी ओर असंगठित क्षेत्रों के ~~श्रमिकों की तरह~~ श्रमिक संगठित क्षेत्रों के श्रमिकों की तरह हड़ताल चलाने में सफल नहीं होते। इस कारण उनकी कार्य एवं नियोजन की दशाएँ भी अपेक्षाकृत निम्न कोटि की हैं।

(ii) हड़ताल के सफल होने से श्रमिकों के बीच भाईचारे एवं एकता की भावना बढ़ती है तथा श्रमिक ~~संघों के~~ संघों के बीच उनकी आस्था दृढ़ होती है। श्रमिकों के बीच एकता एवं भाईचारे की भावना के दृढ़ होने से श्रमिक संघों की प्रतिष्ठा और प्रभावकारिता बढ़ती है। शक्तिशाली श्रमिक संघ अपने सदस्यों की समस्याओं के समाधान में अधिक सफल होते हैं।

(iii) कई संघवादियों की दृष्टि में हड़ताल कभी भी विफल नहीं होती। उनके मत में हड़ताल एक प्रभावशाली शस्त्र है जिसका प्रयोग करते रहने से श्रमिकों की प्रतिष्ठा एवं शक्ति में वृद्धि होती है। हड़ताल के माध्यम से श्रमिक राजनीतिक सत्ता भी प्राप्त करते हैं।

नियोजकों पर प्रभाव (Effects on Employers)

1. प्रतिकूल प्रभाव (Adverse Effects)

(i) अधिकांश स्थितियों में हड़ताल का नियोजकों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। हड़ताल के कारण उत्पादन के सारे कार्य ठप पड़ जाते हैं जिससे उद्योग को गहरी क्षति पहुँचती है। जब

Scanned with CamScanner

हड़ताल लम्बी अवधि तक चलती है तब नियोजकों को चाहे तथा कितनीय कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। कभी-कभी हड़ताल की अवधि में अनिवार्य कार्यों का संचालन भी कठिन होता है। हड़ताल के कारण कच्चे माल की बर्बादी होती है और साथ ही साथ यंत्रों और मशीनों के खराब होने का भय बना रहता है।

(ii) जब हड़ताल के फलस्वरूप श्रमिकों की मांगें पूरी करनी पड़ती हैं, तो नियोजकों पर आर्थिक भार बढ़ जाता है। ऐसा भी देखने में आया है कि कई नियोजक श्रमिकों की मांगें पूरी करने में पूरी तरह असमर्थ रहते हैं। ऐसी स्थिति में वे अपने प्रतिष्ठानों में तालाबन्दी करने या उसे बन्द करने के लिये बाध्य हो जाते हैं। कभी-कभी हिंसा पर उतारू श्रमिक तोड़ फोड़ के भी कार्य कर बैठते हैं जिससे नियोजक को भारी क्षति उठानी पड़ती है।

(iii) हड़ताल के कारण नियोजक उत्पादन से सम्बन्धित सामानों की आपूर्ति करने वाले व्यक्तियों के साथ होने वाले समझौते को तोड़ने के लिए बाध्य हो जाते हैं। इससे दोनों के बीच संबंध खराब हो जाता है।

(iv) एक हड़ताल में सफल होने पर श्रमिकों का हौसला बढ़ जाता है। वे नियोजकों के सामने नित्य नई-नई मांगें पेश करने लगते हैं। इससे नियोजक के अधिकार संकुचित होने लगते हैं।

(v) हड़ताल की अवधि में नियोजक व्यापार श्रमिकों की सहायता प्राप्त करते हैं तथा हड़ताल को तोड़ने का भी प्रयास करते हैं, जिससे उन्हें अतिरिक्त आर्थिक भार तथा मानसिक तनाव का सामना करना पड़ सकता है।

(vi) हड़ताल के समय नियोजकों को विज्ञापन, इश्तहारों तथा सुरक्षा व्यवस्था पर अतिरिक्त व्यय भी करना पड़ सकता है।

Scanned with CamScanner

का प्रयोग किया जाएगा तथा संचित विस्फोटक के निकासी व निष्कासन के सुरक्षा के अधीन किए जायेंगे। प्रज्वलन (Ignition) के सभी स्त्रोतों को प्रभावकारी आवरण (effective enclosures) में रखा जाएगा। राज्य सरकार को इन उपबंधों में छूट देने का अधिकार है।

(19) आग लगने की दशा में सावधानियाँ। (Precaution in case of fire)

प्रत्येक कारखाना में आग लगने तथा इसके फैलने से बचने हेतु सभी आवश्यक कदम उठाये जायेंगे। इस हेतु निम्न कदम उठाये जायेंगे—

सभी व्यक्तियों को आग से बचाने हेतु सुरक्षित साधन मुहैया करना, आग से बचने हेतु आवश्यक उपकरण तथा अग्निशामक की व्यवस्था करना।

प्रत्येक कारखाना में सभी श्रमिकों को आग से बचाव के उपकरणों की समुचित जानकारी देने हेतु प्रभावकारी कदम उठाये जायेंगे तथा आत्मरक्षार्थ हेतु बच निकलने वाले मार्गों के बारे में समुचित प्रशिक्षण दिए जायेंगे।

राज्य सरकार इस संबंध में आवश्यक नियम बना सकती है।

(20) दोषयुक्त भाग या स्थायित्व की जाँच के सम्बन्ध में निर्देश (Specification of defective parts or test of stability)

यदि कारखाना निरीक्षक यह महसूस करता है कि कोई भवन या भवन का कोई भाग या रास्ते या रास्ते का

Scanned with CamScanner

सामान्यतः हड़ताल का समुदाय या राज्य के आर्थिक एवं राजनीतिक क्रिया-कलापों पर बुरा प्रभाव पड़ता है। हड़ताल के फलस्वरूप समुदाय को होने वाली क्षतियाँ हड़ताल की व्यापकता तथा उससे प्रभावित उद्योगों और सेवाओं की प्रकृति पर निर्भर करती है। कई हड़तालें ऐसी भी हुई हैं जिनसे सारे राज्य या समुदाय के जीवन अस्त-व्यस्त हुए हैं। यही कारण है कि कई देशों, विशेषकर विकासशील देशों में, हड़ताल पर विभिन्न प्रकार के प्रतिबन्ध लगे होते हैं। हड़तालों की अधिकता एवं व्यापकता से देशों के में राष्ट्रीय आय की वृद्धि अवरुद्ध हो जाती है और आर्थिक विकास शिथिल पड़ जाता है। हड़ताल से बेरोजगारी और मुद्रा-स्फीति को भी प्रोत्साहन मिलता है।

जनता पर प्रभाव (Effects upon public)

हड़ताल का प्रभाव जनता पर भी पड़ता है। जब कभी भी नियोक्ता एवं श्रमिक अपने-अपने हित के लिए लड़ना शुरू करते हैं, तो सार्वजनिक हित का उल्लंघन किया जाता है। रेलवे, परिवहन, डाक-तार विभाग, कोयला, लोहा, विद्युत उद्योग इत्यादि में हड़ताल होने के फलस्वरूप सार्वजनिक जीवन सदा अस्त-व्यस्त और दयनीय हो जाती है। जब कभी हड़तालें उपभोक्ता उद्योग में होते हैं तो उनसे उपभोग की वस्तुओं के मूल्य बढ़ जाते हैं तथा जीवन यापन लागत में वृद्धि होती है, जिसके कारण साधारण जनता को एक उपभोक्ता के रूप में काफी कठिनाई का सामना करना पड़ता है। इस प्रकार आधुनिक समय में हड़ताल का प्रभाव नियोक्ता एवं श्रमिकों के बीच सीमित नहीं रहता बल्कि सामान्य जनता को भी पूरी तरह प्रभावित करता है।

Scanned with CamScanner